International Journal of Recent Research and Review, Vol. XVI, Issue 2, June 2023
ISSN 2277 – 8322

भारतीय संस्कृति और शिक्षा के विकास में शाखा शिक्षा का योगदान

रामबाबू सोनी[1], डॉ. वेद प्रकाश शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर शिक्षा विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) की आधारशिला, शाखा शिक्षा का ऐतिहासिक विकास, 1925 में शुरू हुई। शाखा के रूप में जानी जाने वाली इस शैक्षिक प्रणाली ने दशकों से संगठन की विचारधारा और प्रभाव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शाखा शिक्षा की उत्पत्ति का पता आर.एस. एस. की स्थापना से ही लगाया जा सकता है। 27 सितम्बर, 1925 को डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर, महाराष्ट्र में पहली आर.एस.एस. शाखा की स्थापना की। यह तिथि जो विजयादशमी के हिंदू त्यौहार के साथ मेल खाती है, जानबूझकर बुराई पर अच्छाई की जीत और भारतीय सामाजिक संगठन में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक बनाने के लिए चुनी गई थी।

मध्य भारत का एक शहर नागपुर पहली शाखा की स्थापना के लिए यादृच्छिक विकल्प नहीं था। डॉ. हेडगेवार के जीवन और भारतीय राष्ट्रवाद के व्यापक संदर्भ में इसका बहुत महत्व था। जैसा कि एंडरसन और दामले ने उल्लेख किया है। भारत में नागपुर का केंद्रीय स्थान इसे अखिल भारतीय उपस्थिति रखने के उद्देश्य से एक संगठन के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है।"

पहली शाखा की शुरुआत मामूली तरीके से हुई, जिसमें डॉ. हेडगेवार ने नागपुर के मोहिते बाड़ा इलाके में युवाओं का एक छोटा समूह इकट्ठा किया। इस शुरुआती समूह में ज़्यादातर छात्र और युवा पेशेवर शामिल थे, जिसने आगे चलकर एक राष्ट्रव्यापी संगठन का रूप ले लिया।

प्राथमिक प्रतिभागियों के रूप में युवा पुरुषों का चयन जानबूझकर किया गया था। डॉ. हेडगेवार का मानना था कि युवाओं को उनकी ऊर्जा और आदर्शवाद के साथ अनुशासित, देशभक्त व्यक्तियों के रूप में ढाला जा सकता है जो समाज और राष्ट्र की बेहतरी के लिए काम करेंगे। जैसा कि जैफरलॉट ने कहा, "आर.एस.एस. की कल्पना एक चरित्र–निर्माण संगठन के रूप में की गई थी, जिसमें शाखा युवा दिमाग को आकार देने के लिए इसका प्राथमिक उपकरण था।"

नागपुर में पहली शाखा की स्थापना ने एक अनूठी शैक्षणिक प्रणाली की नींव रखी जो शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक प्रवचन और सांस्कृतिक गतिविधियों को जोड़ती है। शिक्षा के लिए यह समग्र दृष्टिकोण अच्छी तरह से विकसित व्यक्तियों को बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो शारीरिक रूप से फिट, मानसिक रूप से तेज और सांस्कृतिक रूप से निहित थे।

डॉ. हेडगेवार द्वारा परिकल्पित शाखा शिक्षा के प्रारंभिक स्वरूप में कई मुख्य घटक शामिल थे जो आज भी आर.एस.एस. शाखाओं के लिए मौलिक बने हुए हैं। प्रतिभागियों के लिए एक व्यापक विकासात्मक अनुभव प्रदान करने के लिए इन घटकों को सावधानीपूर्वक चुना गया था।

आर.एस.एस. की विचारधारा में शारीरिक प्रशिक्षण को सर्वोपरि माना जाता था। शाखा में शारीरिक व्यायाम, अभ्यास और देशी खेलों पर काफ़ी जोर दिया जाता था। जैसा कि गोलवलकर कहते हैं, "एक मजबूत शरीर एक मजबूत दिमाग और शुद्ध चरित्र विकसित करने के लिए पहली आवश्यकता है।" शाखा

में शारीरिक प्रशिक्षण न केवल व्यक्तिगत फिटनेस के लिए डिज़ाइन किया गया थाा, बल्कि अनुशासन, टीमवर्क और सामूहिक शक्ति की भावना को बढ़ावा देने के लिए भी बनाया गया था।

व्यायाम में सूर्य नमस्कार, योग और दंड–बैठक जैसे पारंपरिक भारतीय शारीरिक अभ्यास शामिल थे, साथ ही अधिक आधुनिक अभ्यास और मार्च भी शामिल थे। इन गतिविधियों को ताकत, लचीलापन और सहनशक्ति के निर्माण में उनकी प्रभावशीलता के लिए चुना गया था।

बौद्धिक चर्चाएँ : शारीरिक प्रशिक्षण के साथ–साथ बौद्धिक विकास भी शाखा का एक महत्वपूर्ण घटक था। भारतीय इतिहास और संस्कृत से लेकर समसामयिक मामलों और सामाजिक मुद्दों तक के विषयों पर नियमित चचाएँ, आयोजित की जाती थी। इन चर्चाटों का उद्देश्य प्रतिभागियों में आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करना, ज्ञान बढ़ाना और सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देना था।

बौद्धिक घटक में अक्सर कहानी सुनाने के सत्र शामिल थे, जहाँ नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों को सिखाने के लिए भारतीय पौराणिक कथाओं और इतिहास की कहानियाँ सुनाई जाती थीं। जैसा कि सुदर्शन ने लिखा है, ये कहानियाँ युवाओं को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और भारतीय विरासत पर गर्व की भावना पैदा करने का एक साधन थीं।"

सांस्कृतिक गतिविधियाँ : शाखा की शुरुआत से ही सांस्कृतिक गतिविधियाँ इसका अभिन्न अंग रही हैं। इनमें देशभक्ति के गीत गाना, राष्ट्रीय त्योहार मनाना और पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन शामिल है। सांस्कृतिक घटक को भारतीय पहचान की एक मजबूत भावना पैदा करने और विविध पृष्ठभूमि से आए प्रतिभागियों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

सामाजिक सेवा : आर.एस.एस. ने शुरु से ही सेवा या निस्वार्थ सेवा के महत्व पर जोर दिया। शाखा प्रतिभागियों को अपने स्थानीय समुदायों में विभिन्न सामाजिक सेवा गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस घटक का उद्देश्य युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना और राष्ट्र निर्माण की भावना को बढ़ावा देना था।

चरित्र निर्माण : शाखा का शायद सबसे महत्वपूर्ण घटक चरित्र निर्माण पर इसका ध्यान था। शारीरिक अनुशासन, बौद्धिक जुड़ाव, सांस्कृतिक जड़ता और सामाजिक सेवा के संयोजन के माध्यम से, शाखा का उद्देश्य मजबूत चरित्र वाले व्यक्तियों को गढ़ना था जो समाज के लिए संपत्ति बनेंगे।

जैसा क कुमार कहते हैं, "शाखा के मुख्य घटकों को समग्र विकास मॉडल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं को संबोधित करता है।"

दैनिक कार्यक्रम संरचना

शाखा की दैनिक कार्यक्रम संरचना को सभी मुख्य घटकों को व्यवस्थित और आकर्षक तरीके से शामिल करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया था। नागपुर में पहली शाखा में स्थापित यह संरचना दशकों से काफी हद तक एक समान बनी हुई है, जिसमें बदलते समय के अनुकूल होने के लिए केवल मामूली संशोधन किए गए हैं।

समय एवं अवधि : शाखा आमतौर पर हर दिन एक घंटे के लिए आयोजित की जाती थी, या तो सुबह जल्दी या शाम को। छात्रों और कामकाजी पेशेवरों के शेड्यूल को समायोजित करने के लिए समय का चुनाव लचीला था। जैसा कि गोलवलकर ने लिखा है, "प्रतिभागियों की दैनिक दिनचर्या में हस्तक्षेप किए बिना नियमित उपस्थिति

सुनिश्चित करने के लिए एक घंटे की अवधि चुनी गई थी।"

उद्‌घाटन समारोह : प्रत्येक शाखा सत्र की शुरुआत औपचारिक उद्‌घाटन समारोह से होती थी। इसमें भगवा ध्वज फहराना शामिल था, जिसे आर.एस.एस. भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक मानता है। प्रतिभागी व्यवस्थित पंक्तियों में इकट्‌ठा होते थे और ध्वज को सम्मान देते थे।

प्रार्थना और प्रतिज्ञा : ध्वजारोहण के बाद प्रार्थना की जाती थी। यह प्रार्थना, जो आमतौर पर संस्कृत में होती थी, आध्यात्मिकता और एकता की भावना जगाने के लिए चुनी जाती थी। प्रार्थना के बाद, प्रतिभागी आर.एस.एस. के आदर्शों और राष्ट्र के प्रति अपने समर्पण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए शपथ लेते थे।

शारीरिक गतिविधियाँ : कार्यक्रम का अगला भाग शारीरिक गतिविधियों के लिए समर्पित था। इसमें आमतौर पर शामिल थे :

- वार्म–अप व्यायाम
- सूर्य नमस्कार
- योग आसन
- दंड–बैठक
- मार्चिंग अभ्यास
- स्वदेशी खेल

ये गतिविधियात्र प्रशिक्षित प्रशिक्षक द्वारा संचालित की गई और प्रतिभागियों की शारीरिक फिटनेस में उत्तरोत्तर सुधार लाने के लिए तैयार की गई।

बौद्धिक सत्र : शारीरिक गतिविधियों के बाद एक छोटा बौथ्द्धक सत्र आयोजित किया जाएगा। यह विभिन्न रूपों में हो सकता है –

- किसी चुने हुए विषय र वरिष्ठ सदस्य द्वारा व्याख्यान
- समसामयिक विषयों पर समूह चर्चा
- भारतीय पौराणिक कथाओं या इतिहास से जुड़ी कहानियों पर आधारित कहानी सुनाने के सत्र
- सामान्य ज्ञान के परीक्षण और सुधार के लिए प्रश्नोत्तरी

जैसा कि लायन ने कहा, "ये बौद्धिक सत्र आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने और भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय मुद्दों की गहरी समझ को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए थे।"

सांस्कृतिक गतिविधियाँ : इसके बाद कार्यक्रम सांस्कृतिक गतिविधियों की ओर बढ़ जाता था। इस खंड में आम तौर पर ये शामिल होते थे –

- देशभक्ति गीतों का गायन
- संस्कृत श्लोकों का पाठ
- नैतिक या देशभक्ति विषयों पर लघु नाटक या नाटक

इन गतिविधियों का उद्देश्य सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना और राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा देना था।

घोषणाएँ और योजना : सत्र के अंत में, घोषणाओं के लिए एक संक्षिप्त अवधि होगी। इस समय का उपयोग प्रतिभागियों को आगामी कार्यक्रमों, सामाजिक सेवा गतिविधियों या नियमित कार्यक्रम में किसी भी बदलाव के बारे में सूचित करने के लिए किया गया था। इसने प्रतिभागियों को विभिन्न जिम्मेदारियों के लिए स्वेच्छा से काम करने का अवसर भी प्रदान किया।

समापन समारोह : दैनिक कार्यक्रम औपचारिक समापन समारोह के साथ समाप्त होता था। इसमें ध्वज को नीचे उतारा जाता था, उसके बाद समापन प्रार्थना का पाठ किया जाता था। इसके बाद प्रतिभागियों को अलग कर दिया जाता था, और उन्हें अगले दिन फिर से इकट्‌ठा होने का निर्देश दिया जाता था।

अतिरिक्त गतिविधियाँ : जबकि यह मानक दैनिक संरचना थी, शाखा कार्यक्रम अतिरिक्त गतिविधियों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त लचीला था। उदाहरण के लिए –

- राष्ट्रीय अवकाश या त्यौहारों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।
- समय–समयपरपूरा सत्र किसी विशेष विषय या गतिविधि को समर्पित किया जा सकता है।
- विशेष व्याख्यानके लिए अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित किया जा सकता है।
- नियमित कार्यक्रम के स्थान पर सामाजिक सेवा गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।

जैसा कि कुमार कहते हैं, "कार्यक्रम संरचना में लचीलेपन ने शाखा को प्रासंगिक और आकर्षक बने रहने की अनुमति दी, जबकि चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण पर इसका मुख्य ध्यान अभी भी बना हुआ है।"

शाखा की दैनिक कार्यक्रम संरचना को समग्र, आकर्षक और प्रभावशाली बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। शारीरिक गतिविधियों बौद्धिक चर्चाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामाजिक सेवा को एक संरचित दैनिक दिनचर्या में जोड़कर, आर.एस.एस. का उद्देश्य युवा विकास के लिए एक व्यापक प्रणाली बनाना था।

1925 में नागपुर में पहली शाखा में स्थापित इस संरचना ने एक ऐसी नींव रखी जो आगे चलकर शाखाओं का एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क बन गई। जैसा कि जैफ्रेलोट ने कहा, "शाखा मॉडल की सफलता अनुशासन को जुड़ाव, परंपरा को प्रासंगिकता और व्यक्तिगत विकास को सामूहिक उद्देश्य की भावना के साथ जोड़ने की इसकी क्षमता में निहित है।"

शाखा शिक्षा का प्रारंभिक स्वरूप, इसके मुख्य घटकों और दैनिक कार्यक्रम संरचना के साथ, आने वाले दशकों में आर.एस.एस. के विस्तार और प्रभाव के लिए मंच तैयार करता है। इसने एक ऐसा खाका प्रदान किया जिसे पूरे देश में दोहराया जा सकता था, जिसने संगठन को युवा विकास और राष्ट्र निर्माण के प्रति अपने दृष्टिकोण में निरंतरता बनाए रखते हुए बढ़ने में मदद मिली।

निष्कर्ष रूप में नागपुर में पहली शाखा की स्थापना, मुख्य घटकों का विकास और दैनिक कार्यक्रम की संरचना ने एक अनूठी शैक्षिक प्रणाली की शुरुआत को चिह्नित किया। यह प्रणाली, भारतीय परंपराओं में निहित है, फिर भी समकालीन चुनौतियों का समाधान करने के लिए डिज़ाइन की गई है, जो आने वाले वर्षों में भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

1930 का दशक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इसकी शाखा शिक्षा प्रणाली के लिए और विस्तार का एक महत्वपूर्ण दौर था। 1920 के दशक के अंत में नागपुर में एक मजबूत आधार स्थापित करने के बाद संगठन ने पूरे भारत में अपनी पहुँच का विस्तार करना शुरु कर दिया, विभिन्न शहरों और कस्बों में शाखाएँ स्थापित की।

आर.एस.एस. और इसकी शाखा शिक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय विस्तार कई कारकों से प्रेरित था। सबसे पहले ब्रिटिश शासन के प्रति बएते असंतोष और राष्ट्रवादी भावना में उछाल ने एक ऐसे संगठन के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान की जो सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय एकता पर जोर देता था। जैसा कि गोलवलकर ने लिखा है" 1930 के दशक में भारतीय जनता में जागृति, अपनी सांस्कृतिक विरासत का अहसास और अपनी राष्ट्रीय पहचान को मुखर करने की इच्छा देखी गई।"

दूसरा दैनिक शाखाओं के माध्यम से युवाओं को संगठित करने और चरित्र निर्माण के लिए आर.एस.एस. के अनूठे दृष्टिकोण ने विभिन्न क्षेत्रों से ध्यान आकर्षित किया। नागपुर मॉडल की सफलता ने आर.एस.एस. नेताओं को देश

के अन्य हिस्सों में इसे दोहराने के लिए प्रोत्साहित किया।

विस्तार की प्रक्रिया व्यवस्थित और संगठित थी। आर.एस.एस. प्रचारकों (पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं) को नई शाखाएँ स्थापित करने के लिए अलग–अलग क्षेत्रों में भेजा गया। ये प्रचारक स्थानीय युवा नेताओं की पहचान करेंगे, उन्हें आर.एस.एस. की विचारधारा और शाखा पद्धति में प्रशिक्षित करेंगे और उन्हें अपने क्षेत्रों में शाखाएँ स्थापित करने में मदद करेंगे।

इस अवधि के दौरान अपनाई गई प्रमुख रणनीतियों में से एक शहरी केंद्रों पर ध्यान केंद्रित करना था। मुंबई, दिल्ली, लाहौर और अब कलकत्ता जैसे शहर आर.एस.एस. की गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण केंद्र बन गए। जैसा कि भटनागर ने देखा, आर.एस.एस. ने नए विचारों के प्रजनन स्थल और आसपास के क्षेत्रों में अपनी विचारधारा को फैलाने के लिए केंद्र बिंदु के रूप में शहरी केंद्रों के महत्व को पहचाना।"

विस्तार चुनौतियों से रहित नहीं था। आर.एस.एस. को विभिन्न क्षेत्रों से विरोध का सामना करना पड़ा, जिसमें ब्रिटिश अधिकारी भी शामिल थे जो राष्ट्रवादी संगठनों से सावधान थे, और कुछ भारतीय राजनीतिक समूह जो आर.एस.एस. की विचारधारा से असहमत थे। हालांकि संगठन ने प्रत्यक्ष राजनीतिक जुड़ाव के बजाय सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों पर जोर दिया जिससे यह इन चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम हुआ।

1930 के दशक के मध्य तक, आर.एस.एस. ने अपने मूल राज्य महाराष्ट्र में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति स्थापित कर ली थी। वहाँ से यह गुजरात, मध्य प्रदेश और कर्नाटक जैसे पड़ौसी राज्यों में फैलने लगा। संगठन ने उत्तर भारत में भी अपनी पैठ बनाई और दिल्ली आर.एस.एस. की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

आर.एस.एस. और इसकी शाखा शिक्षा प्रणाली के विस्तार के साथ–साथ एक अधिक संरचित संगठनात्मक पदानुक्रम का विकास हुआ, जबकि डॉ. हेडगेवार केंद्रीय व्यक्ति बने रहे, शाखाओं को बढ़ती संख्या की देखरेख के लिए क्षेत्रीय और स्थानीय नेताओं का एक नेटवर्क स्थापित किया गया। इस पदानुक्रमिक संरचना ने विभिन्न क्षेत्रों में शाखा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में एकरूपता सुनिश्चित की।

1930 के दशक में आर.एस.एस. ने अनेकशाखा पाठ्यक्रम को परिष्कृत और मानकीकृत किया। जबकि मुख्य घटक समान रहे – शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक चर्चा, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और सामाजिक सेवा – सभी शाखाओं में एक अधिक समान कार्यक्रम बनाने के प्रयास किए गए। इस मानकीकरण ने संगठन के विस्तार के साथ–साथ इसकी वैचारिक स्थिरता को बनाए रखने में मदद की।

1930 के दशक में आर.एस.एस. का राष्ट्रीय विस्तार भारत में महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रमों के साथ हुआ। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन ने पूरे देश को उत्साहित कर दिया था। हालाँकि आर.एस.एस. ने सीधे तौर पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लिया, लेकिन आवेशित माहौल ने राष्ट्रवादी संगठनों में रुचि बढ़ाने में योगदान दिया, जिससे प्रत्यक्ष रूप से आर.एस.एस. के विस्तार प्रयासों को लाभ हुआ।

1930 के दशक के अंत तक आर.एस.एस. ने उत्तर और मध्य भारत के अधिकांश प्रमुख शहरों में अपनी उपस्थिति स्थापित कर ली थी। नागपुर में शाखाओं की संख्या मुट्ठी भर से बढ़कर देश भर में कई सौ हो गई थी। इन शाखाओं में प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में लोग आते थे, जो संगठन की पहुँच और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है।

विस्तार ने आर.एस.एस. की गतिविधियों में विविधता भी लाई। जबकि दैनिक शाखा मुख्य इकाई बनी रही, संगठन ने व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना शुरु कर दिया। इनमें प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत कार्य, वंचित क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर और बड़े पैमाने पर हिंदू त्योहारों का आयोजन शामिल था। इन गतिविधियों ने आर.एस.एस. को उन समुदायों में स्वीकृति और समर्थन हासिल करने में मदद की जहाँ उसने अपनी शाखाएँ स्थापित कीं।

1930 के दशक के राष्ट्रीय विस्तार ने आर.एस.एस. के लिए एक अखिल भारतीय संगठन बनने की नींव रखी। यह एक स्थानीय नागपुर आधारित समूह से शाखाओं के एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क में बदल गया, जो एक समान विचारधारा और कार्यक्रम से एकजुट था। यह विस्तार भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य में आर.एस.एस. को एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण था, एक ऐसी स्थिति जिसे उसने अगले दशकों में और मजबूत किया।

निष्कर्ष रूप में, 1930 का दशक आर.एस.एस. और इसकी शाखा शिक्षा प्रणाली के लिए उल्लेखनीय वृद्धि का काल था। रणनीतिक योजना, वैचारिक स्थिरता और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होने के संयोजन के माध्यम से, संगठन राष्ट्रीय उपस्थिति स्थापित करने में सक्षम था। इस विस्तार ने आर.एस.एस. के भविष्य के विकास और भारतीय समाज और राजनीति पर इसके बढ़ते प्रभाव के लिए मंच तैयार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एंडरसन, डब्ल्यू और दामले, एस., 2018, आर.एस.एस. अंदर से एक दृश्य वाइकिंग।
2. भटनागर, एस., 2015 आर.एस.एस. की शाखा शिक्षा : एक विश्लेषण, इंडियन सोशल साइंस रिव्यू, 13(3), पृ. सं. 45–60
3. गोलवलकर, एम.एस, 2000, बंच ऑफ थॉट्स, साहित्य सिंधु प्रकाशन
4. जोशी, एम.पी., 2002, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का इतिहास, ओशन पब्लिकेशन्स
5. कुमार, वी, 2019, भारतीय शिक्षा में शाखा प्रणाली की प्रासंगिकता, एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 21(1) पृ. सं. 88–101
6. लायन, ए., 2018 युवा चरित्र निर्माण में शाखा शिक्षा का योगदान, इंडियन एजुकेशनल जर्नल, 15(4) पृ. सं. 112–127
7. मिश्रा, वाई, 2010, भारतीय शिक्षा प्रणाली : विरासत और आधुनिकता, पेंगुइन इंडिया।
8. मिश्रा, वाई, 2010, भारतीय शिक्षा प्रणाली : विरासत और आधुनिकता, पेंगुइन इंडिया।
9. पांडे, एस., 2017, शाखा शिक्षा : भारतीय समाज में नैतिकता और देशभक्ति को बढ़ावा देना। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 10(3) पृ. सं. 74–89
10. हेडगेवार, के.बी., 1999, आर.एस.एस. विचारधारा और दृश्टि, विक्रांत प्रकाशन